डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–27 अप्रैल, 2020)

छायावाद युग की सामान्य प्रवृत्तियाँ

नयी अभिव्यंजना प्रणाली, वैयक्तिकता तथा नयी वैचारिकी की षुरुआत को 'छायावाद' नाम से जाना जाता है। वह एक ऐसी सर्वव्यापक, सर्वात्मवादी तथा मानववादी साहित्यिक चेतना है, जो जीवन तथा जगत की जड़ता, इतिवृतात्मकता तथा स्थूलता के विरुद्ध भाव के स्तर पर व्यक्ति स्वातंत्र्य एवं आत्मनिष्ठता को स्वीकार करती है। संस्कृत काव्यधारा में जिस रोमांटिक धारा का आरंभ कालिदास ने किया, रीतिकाल में घनानन्द ने तथा पष्चिमी साहित्य में षेली, वायरन, कीट्स आदि ने किया, उसकी समग्र अभिव्यक्ति अकेले छायावाद में देखने को मिलता है। जयषंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा छायावाद के चार महा स्तंभ हैं, जिनपर छायावाद की साहित्यिक और सांस्कृतिक व्यापकता और गरिमा टिकी है। प्रसाद संस्कृति और दर्षन को स्वर देते हैं तो पंत प्रकृति और उसकी कोमलता तथा कल्पनाषीलता को महत्त्व देते हैं। निराला जहां पौरुष और क्रांति को स्वर देते हैं, वहीं महादेवी वर्मा रहस्य–दर्षन, दुःखवाद एवं नारी की स्वतंत्रता के साथ भावात्मकता को तरजीह देती हैं।

मोटेतौर पर 1920 से 1936 तक का समय छायावाद युग कहलाता है। 'छायावाद' नाम काव्य की अस्पष्टता के लिए 1920 के आसपास मुकुटधर पाण्डेय द्वारा दिया गया था। बाद चलकर अष्ष्टता को काव्य का एक विषिष्ट गुण माना गया। छायावाद की 'छाया' को परिभाषित करने से स्पष्ट होता है कि वह स्थूल वस्तु पर मन की अनुभूतियों की अत्यंत सूक्ष्म और चंचल छाया है, जिसमें कवि की निजी भावुकता और कल्पनाषीलता का रंग घुला–मिला है। इस रंग में जीवन और जगत, साहित्य और संस्कृति तथा नारी मुक्ति और दर्षन के विविध सौंदर्य एक साथ उपस्थित दिखलायी पड़ते हैं। यहां खड़ी बोली की कर्कषता की जगह अभिव्यंजना के लिए अतिषय सुकुमार षब्दों और कहीं–कहीं ओजपूर्ण षब्दों के प्रयोग से जीवन के समग्र राग विराग को अभिव्यक्ति मिली है। द्विवेदी युग के बाद का परिवर्तित काव्य और जीवन नये स्वर में अभिव्यक्त हुआ है–

'नव गति, नव लय, ताल छन्द नव,
नवल कंठ, नव जलद मन्द्र रव,
नव नभ के नव विहग–वृन्द को
नव पर नव स्वर दे।' – निराला

छायावाद के संबंध में प्रायः दो पक्ष प्रचलित हैं। एक, आध्यात्मिक पक्ष और दूसरा लौकिक पक्ष। आध्यात्मिक पक्ष को तथाकथित रहस्यवाद का प्राथमिक रूप कहा गया है। इसके अनुसार प्रकृति में चेतना का आरोप 'छायावाद' है और उस चेतना के साथ विष्व चेतना का संयोग स्थापित करना 'रहस्यवाद' है। इस अध्यात्मपरक व्याख्या का मुख्य श्रेय कवियों में महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा और जयषंकर प्रसाद को तथा आलोचकों में नंददुलारे बाजपेयी, केसरी कुमार, गंगा प्रसाद पाण्डेय आदि को जाता है। जयषंकर प्रसाद ने

सिद्धांततः छायावाद को रहस्यवाद से संबद्ध नहीं माना है। प्रसाद जी ने लिखा है, ''मोती के भीतर छाया जैसी तरलता होती है; वैसी ही कान्ति की तरलता अंग में लावण्य कही जाती है। छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति की भंगिमा पर निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौंदर्यमय प्रतीक विधान तथा उपचारवक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विषेषताएं हैं। अपने भीतर से पानी की तरह अन्तरस्पर्ष करके भाव समर्पण करने वाली अभिव्यक्ति छाया कान्तिमय होती है।'' आचार्य रामचंद्र षुक्ल भी उनके मत से सहमत हैं। उन्होंने लिखा है ''.....छायावाद षब्द का प्रयोग रहस्यवाद तक ही न रहकर काव्य षैली के संबंध में भी प्रतीकवाद के अर्थ में होने लगा।'' इन दोनों का मतलब यह है कि उसने षैली के साथ–साथ भावपक्ष में भी नयी क्रांति की सूचना दी थी।

छायावाद की दूसरी व्याख्या उसे नितान्त लौकिक धरातल से जोड़ती है। इसके अनुसार छायावादी काव्य किसी भी अर्थ में आध्यात्मिक नहीं है। उसमें रहस्यवाद का सुखद भ्रम या आभास मिलता है, जो बार–बार कवियों और आलोचकों को अध्यात्म की ओर खींच कर ले जाता है। डॉ. नगेन्द्र, डॉ. देवराज, षिवदानसिंह चौहान और डॉ. नामवर सिंह आदि विद्वानों की राय यही है। डॉ. नगेन्द्र का मानना है कि 'छायावादी कवि को कुंठित वासनाओं से प्रेरणा मिली है, सर्वात्मवाद की रहस्यवाद से नहीं। अतः छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।' डॉ. देवराज का मानना है कि 'छायावादी काव्य की प्रेरक षक्ति प्रकृति के कोमल सूक्ष्म रूपों का आकर्षण है, न कि सामाजिक वास्तविकता का विकर्षण।' इसी प्रकार षिवदानसिंह चौहान ने उसमें 'असंतोष की भावना' को प्रमुखता दी है। कुछ लोग इसे गाँधीवाद से तो कुछ लोगों ने वस्तुवाद और रहस्यवाद के बीच की कड़ी के रूप में देखा है।

वस्तुतः छायावाद की छाया या अस्पष्टता ने साहित्य के विद्वानों को कभी अध्यात्म का चष्मा पहनाता है तो कभी लौकिक जीवन से जोड़ने की दृष्टि देता है। मूलतः छायावाद की प्रेरणा का स्रोत राजनैतिक, सांस्कृतिक, समाज सुधार, साहित्यिक और यूरोपीय दृष्टिकोण रहा है। राजनैतिक दृष्टि से यह काल द्वितीय विष्वयुद्ध की विभीषिका तथा आजादी और उसके प्रष्नों से जुड़ा हुआ है। ऐतिहासिक दृष्टि से 1857 से लेकर तत्कालीन समय तक भारत की स्वतंत्रता, भारतीय संस्कृति का ध्वंस और उससे जुड़े आंदोलन केन्द्र में है। राजनैतिक दृष्टि से अंग्रेजों ने अपनी साम्राज्यवादी नीति के तहत भारत का व्यापक षोषण तथा सामाजिक स्तर पर उसके रहन–सहन, आचार–विचार, सहिष्णुता–भाईचारा, भाषा–संस्कार सबको प्रभावित और परिवर्तित कर रहा था। सामाजिक सुधारवादियों रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, अरविन्द आदि का प्रभाव भी केन्द्र में था। राजनीतिक स्तर पर एक ओर महात्मा गाँधी एवं उनका अहिंसात्मक संधर्ष तथा 'आजादी' का प्रभाव केन्द्र में था वहीं दूसरी तरफ भारतीय संस्कृति के ध्वंस तथा किसान और मजदूरों का षोषण केन्द्र में था। यूरोप के षेली, कीट्स, वायरन आदि तथा फ्रांस की राज्य क्रांति और नेपोलियन बोनापार्ट तथा प्रब–देषों (प्रसिया, रसिया, आस्ट्रिया और ब्रिटेन) के संगठनों की भूमिका का भी व्यापक प्रभाव यहां की बौद्धिकता और साहित्य पर पड़ रहा था। साहित्यिक धरातल पर भारतेन्दु और द्विवेदी युगीन राष्ट्रीयता, सामाजिकता, नैतिकता, आदर्षवादिता और इतिवृतात्मकता की परंपरा थी।

इस तरह भारतीय और पष्चिमी दृष्टिकोण का समन्वय और दबाव छायावादी काव्य और उसकी विचारधारा पर स्पष्टतः देखा जा सकता है। सुमित्रानंदन पंत पर रवीन्द्रनाथ टैगोर, अरविन्द तथा षेली, कीट्स, वायरन आदि का व्यापक प्रभाव पड़ा, जिसके कारण उनमें प्रकृति और कल्पनाषीलता के सामंजस्य के साथ प्रगतिवादी विचारधारा या मानववादी रूप मिलता है। यूरोपीय चिन्तन का प्रभाव महादेवी पड़ भी देखा जा सकता है पर उनमें दुःखवाद और

पीड़ा की व्यापक अनुभूति के साथ स्त्री मुक्ति का सवाल प्रमुख था। निराला ओज और विद्रोह के कवि थे। उन्होंने 'राम की षक्ति पूजा' के माध्यम से तत्कालीन भारतीय संघर्ष के जय–पराजय के द्वन्द्व के बीच 'होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन' की उद्घोषणा से आजादी के स्थायी भाव को निर्धारित कर दिया तथा 'राम' के अस्तित्व से 'रामराज्य' की संस्कृति को। इन सभी कवियों में छायावाद के प्रतिनिधि कवि के रूप में जयषंकर प्रसाद माने जाते हैं। प्रसाद ने 'कामायनी' महाकाव्य में युगीन यथार्थ जैसे, अंग्रेजों द्वारा किये जा रहे समग्र भारतीय संस्कृति के ध्वंस को जल–प्रलय के बिम्बों से 'सृष्टि के विनाष' का रूप दिखाया तथा मनु और श्रद्धा को नयी सृष्टि के पुनःनिर्माण का प्रतीक। मनु की वैयक्तिकता और आत्मीयता ''अहंब्रह्मास्मि'' और 'एकोअहं बहुष्याम' के साथ भारतीय संस्कृति को चरितार्थ करता है। वहीं मनु और श्रद्धा एक नये आधुनिक मानव के रूप में पुनःसृजन करने वाला प्रेरक तत्व या एक नये भारत का निर्माणकर्त्ता दिखता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि छायावाद एक नयी अभिव्यंजना प्रणाली है। शरतीय काव्य परंपरा में हिन्दी कविता की यह धारा अपने पूर्ववर्ती युग की प्रतिक्रिया में उपस्थित काव्यधारा है। उसका एक विषेष भावात्मक दृष्टिकोण, एक विषेष दार्षनिक अनुभूति और एक विषेष अभिव्यंजना षैली है, जिसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम का चित्रण मिलता है। उसमें प्रकृति का मानवीकरण है, वेदना की विवृति है, सौंदर्य चित्रण है, गीति तत्वों की प्रमुखता है और उसके व्यक्तिवाद के 'स्व' में 'विराटता' तथा 'अन्य' का भाव प्रवाहित है। बावजूद इसके छायावाद की कुछ अपनी सीमाएं हैं। अस्पष्टता, अतिषय कल्पना, उपमानों का अस्वाभाविक प्रयोग आदि सीमाएं संप्रेषणीयता में कठिनाई पैदा करती है। बावजूद इसके छायावाद के व्यापक आदर्षों, सूक्ष्म सौंदर्य, षोकगीत तथा भारतीय संस्कृति के ध्वंस का वर्णन विष्व साहित्य में दुर्लभ है। इसकी प्रमुख विषेषताएं निम्नलिखित हैं–

1. वैयक्तिकता और आत्मीयता
2. आत्म प्रसार
3. अज्ञात की लालसा
4. प्रकृति प्रेम
5. नये मानव की खोज
6. नारी प्रेम
7. देष प्रेम
8. मानवतावाद
9. भावुकता और कल्पनाषीलता
10. पद विन्यास
11. मुक्त छंद
12. मुक्तक गीति षैली और
13. प्रतीकात्मकता आदि।

दिनांक : 27/04/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**